सत्ता और विचारधारा के प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में उदय प्रकाश का कथा-साहित्य

प्रशान्त सरकार *हिंदी विभाग, कार्सियाँग कॉलेज, दार्जिलिंग(प. बंग.)*

सत्ता का नशा ही ऐसा है कि एक बार मिल जाने पर उसे दोबारा हासिल करने के लिए सत्ताधारी दल या राजनैतिक पार्टियाँ हर तरह के हथकंडे अपनाने के लिए तैयार रहते हैं, जिससे वह फिर से सत्ता पर कायम रहने में सफल हो सके और अपनी मन मर्जी से जनता पर राज कर सकें यही सत्ताधारियों का मूल उद्देश्य होता है। आज का समय भी ऐसा है, जिसमें, जिसके पास, जितनी मात्रा में सत्ता है, वह उतना ही ज्यादा हिंस्र, बर्बर, निरंकुश, अनैतिक, अन्यायी, अमानवीय और शैतान होता है। इस संदर्भ में उदय प्रकाश जी लिखते हैं-

"इतिहास असल में सत्ता का एक राजनीतिक दस्तावेज़ होता है.... जो वर्ग, जाति या नस्ल सत्ता में होती है, वह अपने हितों के अनुरूप इतिहास को निर्मित करती है। इस देश और समाज का इतिहास अभी लिखा जाना बाकी है।"[1]

संसार के प्रत्येक देश और प्रत्येक सरकार की अर्थनीति और राजनीति लगभग एक जैसी है, जो अमीरों को और अमीर और गरीबों को और गरीब बनाने में सत्ता का ही गठजोड़ सामील है। उदय प्रकाश की राजनीतिक समझ बहुत गहरी हैं, विशेष रूप से सत्ता के चरित्र को उजागर करने में जो दक्षता उन्हें हासिल हैं, वह दुर्लभ है। सत्ता का खेल सिर्फ अर्थनीति और राजनीति तक ही सीमित नहीं होती, समाज, संस्कृति एवं ज्ञान के क्षेत्र में भी सत्ता का खेल चलती रहती है और इन्हीं सबों के समुच्चय से ही वह वर्चस्वशाली वर्ग बनता है, जिसकी क्रूरता और अमानवीयता का शिकार आम नागरिक होता है। इसीलिए रचनाकार इस संदर्भ में लिखते हैं-

अब कहीं कोई नागरिक समाज नहीं बचा, सिर्फ सरकारें हैं, कंपनियाँ हैं, सस्थाएँ हैं, माफिया और गिरोह हैं। और अगर अब भी तुम किसी लेखक, कवि या विद्वान को हवाई जहाज में सवार होकर विदेश जाते देखते हो, तो जान लो, वह किसी कंपनी, किसी व्यापारी, किसी संस्था या गिरोह का सदस्य या दलाल है।"[2]

दरअसल आज का विडंबना यही है कि समाज के सबसे बड़े बुद्धिजीवी वर्ग अमीरों और राजनेताओं के चुंगल से बाहर नहीं निकल पाए हैं। आज भूमंडलीकरण के बढ़ता वर्चस्व और सत्ताधारियों के गठजोड़ के कारण भारतीय समाज में अपने पुराने सांस्कृतिक मूल्यों को आधारहीन घोषित कर उसका अतिक्रमण हो रहा है और भूमंडलीय उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। भूमंडलीकरण का प्रभाव सांस्कृतिक मूल्यों पर अधिक हावी है और धीरे-धीरे भारतीय समाज पर भूमंडलीय संस्कृति अर्थात पश्चिमी संस्कृति का वर्चस्व बढ़ता चला जा रहा है। यही भूमंडलीय उपभोक्तावादी संस्कृति का मूल अभीष्ट है। यह सभी पुरातन मूल्यों और विचारधाराओं को खारिज कर उसके स्थान पर नए को प्रश्रय देता है। इसीलिए समाज को अनेक द्वंद्व और विद्रोहों का सामना करना पड़ रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में कहानीकार उदय प्रकाश जी का कहना हैं- आँख जो देख रही थी और दिमाग जो सोच रहा था, उसके बीच की संगति और तर्क गड़बड़ा गए थे। संन्यासी वातानुकूलित गाड़ियों में तीर्थयात्रा कर रहे

1. प्रकाश, उदय. (2009). पीली छतरी वाली लड़की. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ. 14

2. प्रकाश, उदय. (2009). पीली छतरी वाली लड़की. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ. 20-21

थे और एन.आर.आई. पूँजी तथा पेट्रो डॉलर्स से कारसेवा करा रहे थे। अंतर्राष्ट्रीय शस्त्र बाजार में तांत्रिक विभिन्न राष्ट्रों के बीच मिसाइलों, पण्डुब्बियों और लड़ाकू विमानों की खरीद-फरोख्त में दलाली कर रहे थे। पच्चीस साल से गले तक गड्ढे में धँसे एक योगी ने कई देशों के कई शहरों में पाँच तारा होटल खोल रखे थे और पचास साल से पेड़ की मचान पर टंगे एक बाबा के पैर के अंगूठे की छाप अपने माथे पर लगवाने के लिए विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का समूचा कैबिनेट कतार बनाकर कीचड़ में खड़ा था। प्रधानमंत्री इतिहास के सबसे बड़े ठग को सार्वजनिक रूप से लगातार चूमे जा रहा था। पाँच साल पहले एक गाँव में सोते हुए सड़सठ लोगों को गोलियों से भून डालनेवाले डाकू की जीवनी पर बनी फिल्म सुपर हिट हो गई थी और उसे ऑस्कर अवार्ड मिलनेवाला था। महात्मा गांधी को अश्लील गलियाँ देकर राष्ट्र का एक सम्मानित समलैंगिक मीडिया स्टार बन चुका था।"[3]

इस प्रकार यह वर्तमान समाज भूमंडलीकरण के माया जाल में फँस कर विकृत हो गया है। जहाँ आज चारों ओर भय, खून, भ्रम, अपराध, दंगे, दौलत, लालच, दलाली, बेईमानी, लूट-खसोट और अराजकता का ऐसा दृश्य जो न पहले कभी देखी गई और न सुनी गई। इस संदर्भ में रचनाकार अपनी कहानी 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में लिखते हैं-

> "मैं सिर्फ यह कहूँगा कि अराजकता का ऐसा दृश्य, ऐसा भ्रम, ऐसी घूसखोरी और बेईमानी, ऐसा भ्रष्टाचार और ऐसी लूट-खसोट जैसी हमारे राज में आज दिखाई दे रही है, वैसी किसी और देश में न कभी सुनी गई, न कभी देखी गई। अचानक धनाढ्यों की बैंतहा दौलत परस्ती ने विलासिता और भोग के भीषण रूप को चारों तरफ पैदा कर दिया है। इस बुराई से हर डिपार्टमेंट का हर सदस्य प्रभावित है। हर छोटा मुलाजिम ज्यादा-से-ज्यादा धन हड़पकर बड़े मुलाजिम या अधिकारी के बराबर हो जाना चाहता है, क्योंकि वह यह जानता है कि संपत्ति और ताकत ही उसे बड़ा बना रही है। .....विडंबना है कि ये 'साधन' सिर्फ रिश्वतखोरी जैसे भ्रष्ट आचरण के लिए ही नहीं, लूट-खसोट और ठगी-जालसाजी के लिए भी इस्तेमाल हो रहे हैं। इसकी मिसालें ऊपर के पदों पर बैठे लोगों ने कायम की हैं, तो भला नीचे के लोग उसका अनुकरण करने में नाकामयाब क्यों रहें? यह रोग सर्वव्यापी है। यह नागरिक प्रशासन, पुलिस और फौज ही नहीं लेखकों, कलमनवीसों और व्यापारियों तक को अपनी चपेट में ले चुका है।"[4]

इन्हीं अराजकताओं के कारण भूमंडलीकरण से उदय प्रकाश का खासा विरोध है, क्योंकि अपनी तमाम चमक-दमक के बावजूद वह अंतहीन लालसा को जन्म देता है। इसका मूल दर्शन भोगपरक नीति पर आधारित है। नित नए-नए उत्पादन के जरिए वह भोग और विलासिता को बढ़ावा देता है। पूंजी और तकनीकी के दम पर पूरे विश्व में ऐसा जाल विकसित किया गया है, जिससे तीसरी दुनिया के गरीब देशों को संस्थाबद्ध कर उनका शोषण किया जा सके। इसमें अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष और विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाएँ इस नव उपनिवेशवाद की पैरोकार हैं, जिसमें शक्तिशाली देशों का गठजोड़ शामिल हैं। इस व्यवस्था के शीर्ष पर बैठा व्यक्ति अपने हित के अनुसार सबकुछ नियंत्रण कर रहा है उसके लिए रचनाकार उदय प्रकाश बड़े ही व्यंजक शब्दों में भर्त्सना करते हुए कहा हैं कि-

> यही वह आदमी है- खाऊ, तुंदियल, कामुक, लुच्चा, जालसाज और रईस, जिसकी सेवा की खातिर इस व्यवस्था और सरकार का निर्माण किया गया है। इसी आदमी के सुख और भोग के लिए इतना बड़ा बाजार है और इतनी सारी पुलिस और फौज है।[5]

इस प्रकार रचनाकार का मानना हैं कि सत्ताधारी लोग बहुत ही शक्तिशाली होता है और उसका रूप

3. प्रकाश, उदय.(2004) पॉल गोमरा का स्कूटर. नई दिल्ली : वाणी प्रकाश, पृ. 39

4. प्रकाश, उदय.(2004) पॉल गोमरा का स्कूटर. नई दिल्ली : वाणी प्रकाश पृ. 104

5. प्रकाश, उदय.(2009). पीली छतरी वाली लड़की. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ. 11

निरंकुश एवं दमनकारी होता है। जो भी उसके विरुद्ध आवाज उठाने की कोशिश करता है, उसे कुचल दिया जाता है। सत्ताधारी आदमी कितना ताकतवर होता है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसने पिछली कई शताब्दियों के इतिहास में रचे गए दर्शनों, सिद्धांतों और विचारों को एक झटके में अपनी आलीशान बँगले के पीछे कचड़ा बनाकर कूड़ेदान में फेंक दिया है। वे सारे सिद्धांत, जो धर्म ग्रंथों में, समाजशास्त्र या विज्ञान अथवा राजनीतिक पुस्तकों में हैं, उन्हें कूड़ेदान में डाल दिया गया हैं। इस आदमी ने बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में पूँजी, सत्ता और तकनीकी की समूची ताकत को अपने मिट्ठियों में कैद कर लिया है। ऐसे सत्ताधारी लोगों के संदर्भ में उदय प्रकाश अपनी कहानी 'पीली छतरी वाली लड़की' में उन्हें बेपर्दा करने में कोशिश करते हैं। इसीलिए वे लिखते हैं कि-

> यही वह आदमी है, जिसके लिए संसार भर की औरतों के कपड़े उतारे जा रहे हैं। तमाम शहरों के पार्लर्स में स्त्रियों को लिटाकर उनकी त्वचा से मोम के द्वारा या एलेक्ट्रोलेसिस के जरिये रोएँ उखाड़े जा रहे है, जैसे पिछले समय में गड़रिये भेड़ों की खाल से ऊन उतारा करते थे। ...तमाम शहरों और कस्बों के मध्य-निम्न मध्यवर्गीय घरों से निकल-निकल कर लड़कियाँ ऊन शहरों में कुकुरमुत्तों की तरह जगह-जगह उगी ब्यूटी-पार्लर्स में मेमनों की तरह झुंड बनाकर घुसतीं और फिर चिकनी-चुपड़ी होकर उस आदमी की तोंद पर अपनी टांगें छितरा कर बैठ जातीं। इन लड़कियों को टी.वी. 'बोल्ड एंड ब्युटीफुल' कहता और वह लुजलुजा-सा तुंदियल बूढ़ा खुद 'रिच एंड फेमस' था।"[6]

यही वह सिद्धांत था, जिसके सहारे उस सत्ताधारी व्यक्ति ने दुनिया भर के सूचना संजाल को चारों ओर फैला दिया था। सारे टीवी चैनलों, सारे कंप्यूटरों में यही सिद्धांत प्रचारित हो रहा था। आज भूमंडलीकरण के नाम पर जिस उपभोक्तावादी संस्कृति को दुनिया के सामने परोसा जा रहा है उदय प्रकाश उसका खासा विरोध करते हैं, क्योंकि वह अपनी तमाम चमक-दमक के सहारे अंतहीन भूख को जन्म देता है।

उदय प्रकाश सच्ची राष्ट्रीयता और शांति के पक्षधर हैं। वे देश के कड़रों लोगों के बीच शांति और अमन चाहते हैं। वे हिंदू-मुस्लिम के दोनों समुदाय के बीच संघर्ष का कड़ा विरोध करते हैं एवं उसे एक राजनीतिक षडयंत्र करार देते हैं। उनका कहना हैं कि नेशनलिज़्म के मामले में हर बार और हमेशा सिर्फ पाकिस्तान ही क्यों होता है ? किसी दूसरे शक्तिशाली देश के सामने नेशनलिज़्म क्यों नहीं पैदा होता ? जिन्होंने हमें गुलाम बनाया, हथियार भेजें इस देश को बरवाद करने के लिए, जिनके दिए गए हथियारों से हमारे इतने सारे लोग मरे हैं। उनके सामने क्या सचमुच पहले के सारे संदर्भ निरस्त हो गए है। 'राष्ट्रवाद' केवल मुसलमानों से नफरत और अंग्रेजों की चापलूसी के सिद्धांत पर आधारित है? और यही वजह है कि यह राष्ट्रवाद सिर्फ पाकिस्तान के सामने हथियार उठता है और पश्चिम के नव उपनिवेशिक ताकतों के सामने अपनी पूंछ निकाल कर दुम हिलाना शुरू कर देता है।

कहानीकार उदय प्रकाश का यह मानना हैं कि आज भी हमारे देश में खनिज संपदा का अफुरन्त भंडार मजूद हैं। अगर सही नीति और योजना हो तो इसके माध्यम से देश की गरीबी को दूर किया जा सकता है। परंतु सत्ताधारी शक्तियाँ देश की संपत्ति को कौड़ियों के भाव से बहुराष्ट्रीय कंपनियों को बेची जा रही हैं और उस पर माफियाओं और दलालों का हाथ हैं। इस संदर्भ में रचनाकार कहानी 'पीली छतरी वाली लड़की' में एक पात्र हेमंत बरुआ के कथन से यह स्पष्ट करने की कोशिश की हैं कि हमारे देश में खनिज

6. प्रकाश, उदय.(2009). पीली छतरी वाली लड़की. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ. 11

संपदा का अफुरन्त भंडार मौजूद हैं, हमारे जैसे देश में नेचुरल रिसोर्सेज की कोई कमी नहीं है, अगर कमी है तो सिस्टम की।

> "आइ हैव कलेक्टेड अ लाट्स ऑफ डेटा अबाउट असम। अगर आज असम से दिल्ली के इन इंडियन रूलर्स का कंट्रोल हट जाए और वहाँ के नेचुरल रिसोर्सेज पर असम के लोगों का अधिकार हो जाए, तो मालूम है क्या होगा ? असम का पर कैपिटाल इनकम यूनाइटेड अरब एमिराट्स से ज्यादा होगा। दुनिया का सबसे अमीर देश असम होगा, जो आज इंडिया के सबसे गरीब और बैकवर्ड स्टेट्स में से एक है। और यही बात अलग-अलग लगभग हर राज्य पर लागू होती है।"[7]

कहानीकार उदय प्रकाश अपनी 'और अंत में प्रार्थना' कहानी में लोकतांत्रिक व्यवस्था के एक महत्त्वपूर्ण, संवेदनशील एवं विवादास्पद प्रश्न को भी उठाया हैं- सत्ता और विचारधारा के संबंध का। हमारे जैसे देश में समाजवादी विचारधारा बहुत ही लंबे समय से प्रगतिशील और आधुनिक रहा है। परंतु रचनाकार ने इस कहानी में उसके प्रतिपक्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से सत्ता और विचारधारा के संबंध को उठाया हैं। इस कहानी के प्रधान चरित्र डॉ. वाकणकर आर.एस.एस. के एक कार्यकर्त्ता है, जो हिंदुत्ववादी विचारधारा से प्रभावित है। वे जहाँ भी जाते हैं उन इलाकों में इसी संगठन के द्वारा समाज में जागृति लाने का प्रयत्न करते हैं। उनके व्यक्तित्व में विचारधारा के प्रति अंधश्रद्धा की जगह प्रश्नाकुलता अधिक दिखाई देती है। वे अक्सर सोचने लगते हैं कि बांग्लादेश बनने में मुसलमानों ने मुसलमानों के प्रति कितना अन्याय किया ? हमारे देश में भी यदि कभी हिंदू राष्ट्र बना तो वह किस हिंदू का राष्ट्र होगा? क्या वह किस व्यापारी का, किस ठेकेदार और सवर्ण जातियों का या फिर उसमें पिछड़े समाजों की भी कोई जगह होगी? इस प्रकार उन्हें कई बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति संदेह होने लगता है, इसीलिए वह कहता है कि

> "क्या सचमुच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का निर्माण देशभर में हिंदू धर्म के मतावलंबियों के भीतर किसी सामुदायिक किस्म की कौटुंबिक भावना पैदा करने, उनमें नई जागृति लाने, अपनी रूढ़ियों को त्यागने तथा वेदों, उपनिषदों, पुरानों में वर्णित धर्म के मूल स्वरूप को अंगीकार करने की प्रवृत्ति पैदा करने के लिए हुआ है, या इसका कोई दूसरा मकसद है, जिसे यह बखूबी पूरा कर रहा है।"[8]

कहानी में उदय प्रकाश की चिंता भूमंडलीय संस्कृति के राजनीतिक ढांचे को लेकर भी हैं जो अंग्रेजों की दमन-शोषणपरक नीतियों से स्वतंत्र नहीं हो पाया है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था के नाम पर सिर्फ सत्ताधारी राजनीतिज्ञों, भ्रष्ट नौकरशाहों तथा छल-बल से लैस गुंडों का तंत्र विकसित हुआ है। 'और अंत में प्रार्थना' कहानी में इसी चिंता की अभिव्यक्ति है। इस कहानी में डॉ. वाकणकर का चरित्र एक भारतीय मनीषा के द्वंद्वपूर्ण संकट का प्रतीक हैं। लोकतंत्र के नाम पर सत्ताधारियों द्वारा जन साधारण की अवहेलना को देखकर वह स्तब्ध रह जाता है। वह स्वयं को उस अनीतिपूर्ण व्यवस्था का हिस्सा महसूस करता है, जहाँ प्रदूषित पानी से मरती जनता को बचाने के लिए प्रशासन एक जीप मुहैया नहीं कराता, जबकि प्रधानमंत्री दौरे की तैयारी के लिए साठ लाख रुपये खर्चा कर रातों-रात सड़कें बनती हैं, रोशनियाँ की जाती हैं। डॉ. वाकणकर को लगता है कि-

> "कहीं ऐसा तो नहीं जो तंत्र या व्यवस्था यहाँ बनी हुई है, वह अपने आप में एक समानांतर प्रणाली है ? वह सिर्फ अपनी ही दुनिया की चिंताओं में व्यस्त है। शायद उसका हित ही इसमें जुड़ा हुआ हो तो लोग भूख, गरीबी, महामारी आदि से मरें। कहीं हमारे देश में लोकतंत्र का असली अर्थ जनता द्वारा अपनी शत्रु व्यवस्था

7. प्रकाश, उदय. (2009). पीली छतरी वाली लड़की. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ. 66

8. प्रकाश, उदय. (2006). और अंत में प्रार्थना. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ. 165

का चुनाव तो नहीं है ?"[9]

किसी भी लोकतंत्र की कसौटी यही है कि वह अधिकांश जनता का समाज के लिए समता और स्वतंत्रता के अधिकार को कहाँ तक सुनिश्चित कर पाता है। उदय प्रकाश अपनी कहानियों में सत्ताधारी राजनेताओं का भ्रष्टाचारी रूप को जनता के सम्मुख यथार्थ प्रस्तुत किया हैं। हमारे देश के सत्ताधारी राजनेता विकसित देशों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के एजेंट बनकर पूरे देश की जनता का शोषण करते हैं और देश की नीतियाँ उनकी इच्छानुसार बनाते चले जाते हैं। यहाँ तक कि समस्त विचारधाराओं पर उनका ही निर्देश होता हैं। उनका वर्चस्व ही ऐसा है किसी को उनके विरुद्ध आवाज उठाने की हिम्मत ही नहीं होती।

दरअसल विचारधाराओं का ढांचा रूढ़ होता है। उसमें मानवीय संवेदना की गुंजाइश नहीं रहती। आज राजनीतिक पार्टियाँ अपने हित के लिए, अपने फायदे के लिए विभिन्न विचारधाराओं को भुनाने में लगे हुए हैं और जो उनके चुंगल में नहीं फँसते उस व्यक्ति की निष्ठा पर निरंतर आघात की जाती हैं। इसमें सबसे बड़ा संकट तब होता है, जब विचारधाराओं में सत्ता का हस्तक्षेप होता है। आजकल जो विचारधाराओं वाला साहित्य उपलब्ध हैं, वह भी सरकारी फंडखोरी और संस्थाओं में सेंधमारी की तकनीक से लिखा गया है। इसीलिए आज किसी के पास इतनी नैतिकता नहीं है और न साहस है किसी घटना को ज्यों-का-त्यों छाप दें। रचनाकार उदय प्रकाश का यह मानना हैं कि सत्ता की राजनीति अलगाव की राजनीति है। इसलिए वह लोकतांत्रिक मूल्यों को कभी स्थिर नहीं होने देती। आजकल घृणा की राजनीति हो रही है जो एक वर्ग या समुदाय दूसरे के खिलाफ खड़ा करती है। सत्ता का लक्ष्य होता है समाज को ध्रुवीकरण कर विभाजित करना, चाहे वह धार्मिक हो, सामाजिक या सांस्कृतिक हो। विचारधारा में सत्ता का हस्तक्षेप किसी भी लोकतंत्र के लिए बड़ी त्रासदियों से भरा समय होता है। डॉ. वाकणकर का सामना भी इन परिस्थितियों से होता है जब सत्ता परिवर्तन के बाद वह पार्टी सत्ता में आती है, जिसकी प्रेरणा और विकास में संघ की एक निश्चित भूमिका है। डॉ. वाकणकर ने वर्षों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ जुड़ा रहा और इस संगठन के माध्यम से परिवर्तन की कमाना भी की थी। परंतु वही संगठन सत्ता में आने के बाद अब उस तंत्र में भी वह स्वयं को उसी द्वंद्व और दुविधा में पाते हैं जो पहले थी। उनके जैसे कर्मठ, योग्य, चिंतनशील-मननशील व्यक्ति स्वीकार और अस्वीकार के बीच इस अनुभव से गुजरता है कि मानवीयता विचारधारा से कहीं बड़ी है।

अतएव निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता हैं कि आज का यह लोकतंत्र पैसे के ढेर पर खड़ा है। सत्ता आज विचारधाराओं के ऊपर हावी है, जो किसी भी लोकतंत्र के लिए सही नहीं है। लोकतंत्र का सही मकसद है अधिक से अधिक जनताओं को सुविधा मुहैया कर स्वाधीनता प्रदान कराना। परंतु सत्ता की मारामारी ने इसे धन-बल का तमाशा बना दिया है। उदय प्रकाश अपनी रचनाओं में लोकतंत्र के नाम पर अर्थतंत्र के इस मायाजाल को यथार्थ के धरातल पर बखूबी निभाया हैं।

9. प्रकाश, उदय.(2006). और अंत में प्रार्थना. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, पृ. 141

लेखक परिचय

प्रशान्त सरकार
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग, कार्सियाँग कॉलेज, दार्जिलिंग(प. बंग.)